नाम- कुमारी दिव्या
कक्षा- 7
कस्तूरबा गाँधी
आवासीय बालिका
विद्यालय खजुरी कोराँव
इलाहाबाद

बाल विवाह पर कविता

कैसे अजब ये रीति बना दिया
कोमल फूलों को रिवाजों तले दबा दिया।

जिन्हे जीवन क्या है, मालूम नहीं
रिश्ते जिन्हे मालूम नहीं।

अच्छा बुरा मालूम नहीं
अपना पराया मालूम नहीं।

ऐसे नाजुक कन्धों पर
शादी का बोझ डाल दिया।

जैसे दो खुले परिन्दो को
किसी खूँटे से बाँध दिया।

छोटी सी उम्र के भोले-भोले भाव
अनजाने में खेल गये शादी के ये दाँव

पति-पत्नी क्या है, कोई पूँछो इनसे
रिश्ते निभाना क्या है कोई पूँछो इनसे।

एक जश्न की तरह जो ये मना गये
जीवन बंधन खेल-खेल में रचा गये।